. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़कर दिए गए प्रश्नों के अत्यंत संक्षेप में उत्तर लिखिए –

कानिन दै अँगुरी रहिबो जब हीं मुरली धुनिमंद बजै है।
मोहनी तानन सौ रसखानि अटा चढ़ि गोधन गै है तो गै है।।
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझै है।
माइरी वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।।

(क) गोपिका मुरली की किस बात से आकर्षित है?

(ख) सखी से क्या सँभाला नहीं जा रहा है?

(ग) काव्यांश को 'छंद' की दृष्टि से क्या कहा जाता है?

(घ) कृष्ण प्रेम में डूबी गोपिका किसके समझाने पर भी लोक लाज नहीं समझती?

(ङ) काव्यांश की अन्तिम पंक्ति का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट करें?

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अत्यंत संक्षेप में लिखिए।

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माला गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा ना धरौंगी।।

(i) इस सवैये में कौन किससे अपने मन की बातें कह रहा है ?

(ii) नायिका अपने होठों पर मुरली क्यों नहीं धारण करना चाहती है ?

(iii) 'मुरलीधर' किसे कहा गया है ?